मधुबन ओम् शान्ति अंक 288 जुलाई 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(8-06-16)

प्राणेश्वर मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा फालो फादर करते हुए उनके समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की रेस करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अभी तो बाबा ने मुझे अपने प्यारे घर मधुबन/शान्तिवन, शक्ति भवन में बिठाया है। यहाँ बैठे ऐसे वायब्रेशन आते जैसे पूरा ब्राह्मण परिवार हमारे साथ है। बापदादा और आप सबके स्नेह और दुआओं की शक्ति से वायुमण्डल बहुत-बहुत शक्तिशाली बना हुआ है। एक स्थान पर होते भी बाबा अनेकानेक सेवायें कराता रहता है। अभी तो यह जून मास हमारी मीठी मम्मा का मास है। 24 जून 1965 के दिन मम्मा अव्यक्तवतन वासी बनी। उसके बाद साकार में बाबा ने कैसे मात-पिता के रूप से सब बच्चों की पालना की, उसके तो कितने अच्छे-अच्छे अनुभव हैं। हमसे सभी मम्मा के अंग-संग के अनुभव पूछते हैं। शुरू-शुरू में जब मैं यज्ञ में आई तो मुझे पता नहीं था कि यह सभी मम्मा किसको कहते हैं! मैंने समझा शायद बृजइन्द्रा को मम्मा कहते होंगे, क्योंकि उन दिनों में बृजइन्द्रा ने बहुत बड़ा त्याग किया था। फिर संकल्प आया शायद बाबा की लौकिक पत्नी, जिसको जशोदा मैया कहते हैं, उनको मम्मा कहते होंगे! परन्तु पीछे पता चला कि मम्मा तो राधे को कहते हैं, उनको मैं पहले भी जानती थी। जब राधे को मैंने देखा तो उनमें बहुत बड़ा परिवर्तन दिखाई दिया। मुझे बाबा ने छोटे बच्चों को सम्भालने के लिए बेबी भवन में रखा था। मम्मा दादियों के साथ अलग भवन में रहती थी, एक दिन मैं मम्मा से मिलने जब उनके पास पहुंची तो वहाँ 5-6 दादियाँ मम्मा के साथ कुछ रूहरिहान कर रही थी। तब मैंने समझा यह सब दादियां हैं! मुझे अन्दर में बहुत आया कि इन दादियों के बीच मैं कब बैठूंगी! मम्मा के साथ रहने का भाग्य मुझे भी मिल जाये। तो मैंने मम्मा को कहा मम्मा आपने मुझे वहाँ क्यों रखा है? तो मम्मा ने कहा तुम जनक हो ना! तो मैंने मुस्कराया, तब से ले करके कभी नहीं कहा वहाँ क्यों रखा है! जहाँ रखा है वहाँ ठीक है। फिर कुंज भवन में भी बाबा ने रखा पर जहाँ रखें वहाँ हाज़िर। (मम्मा में कौन सी ऐसी विशेषता थी जो वो मम्मा बनी?) मम्मा त्याग और तपस्या की मूर्ति थी। मम्मा की सूरत मूरत से तपस्या झलकती थी। वह बहुत गम्भीर रहती थी। मम्मा का बोलना, चलना, फिरना, भण्डारे में चक्कर लगाना सबसे न्यारा था। मम्मा बोलती बहुत कम थी, सदा मुस्करा करके बहुत कम शब्दों में ईशारे से शिक्षा दे देती थी। बाबा से अटूट प्यार था। मम्मा बाबा के सब इशारों को कैच करने में नम्बरवन थी। मम्मा सदा कहती जो बाबा की आज्ञा, मम्मा का यही स्लोगन रहा कि हुक्मी हुक्म चला रहा है।

भक्ति में जो गायन है जगत् अम्बा, काली, सरस्वती, वैष्णव देवी, शीतला, दुर्गा... यह सब स्वरूप मम्मा में प्रैक्टिकल देखे हैं। उनका जैसा नाम था राधे, वह प्रैक्टिकली सतयुगी राधे के संस्कार लेकर यज्ञ में आई। यहाँ फिर लक्ष्मी बनकर रही तो वो सारे लक्षण उसमें देख लिये। फिर काली है, मम्मा के सामने जाते ही पुराने संस्कार भस्म। बड़े-बड़े गृहस्थियों को, बड़ी उम्र वाले बुजुर्गों को भी मम्मा ने योगी बना दिया। मम्मा की कभी कहीं आँख नहीं डूबी, न खाने में, न पहनने में। हम उस माँ के बच्चे हैं। हमें भी ऐसे मात-पिता के कदमों में कदम रखकर उनके समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। बोलो, आप सब भी ऐसा ही लक्ष्य रख पुरुषार्थ की रेस कर रहे हो ना। बाकी तो मधुबन में सदा ही बेहद की सेवायें चलती रहती हैं। सब स्थानों पर बाबा के अनेकानेक बच्चे आते खूब रिफ्रेश होते हैं।

अच्छा! सभी को हमारी बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"साधारणता में भी महानता का अनुभव करो और कराओ"

1) जैसे ब्रह्मा बाप साकार सृष्टि में सिम्पल रहते हुए आप सभी के आगे सैम्पल बने। उनकी अति साधारणता ही अति महानता को प्रसिद्ध करती रही। साधारण अर्थात् सिम्पल नहीं तो प्राब्लम बन जाते हैं। रहन-सहन भी सिम्पल न होने के कारण औरों के लिए वा अपने लिए कोई न कोई प्राब्लम बन जाते हैं। प्राब्लम वाले सिम्पल नहीं बन सकते। जैसे गाँधी ने सिम्पल बन करके एक सैम्पल बनकर दिखाया। उनकी सिम्पल एक्टिविटी ही महानता की निशानी थी, ऐसे सिम्पल रहकर सैम्पल बनो।

2) साधारण कर्म वा संस्कारों के वश जो संकल्प चलते हैं, उन्हें परिवर्तन करने के लिए स्वयं को महान आत्मा समझो। स्मृति महान् की है तो संस्कार, संकल्प, बोल वा कर्म सभी चेन्ज हो जाते हैं इसलिए सदैव महान् और मेहमान समझकर चलो। तो वर्तमान में और भविष्य में और फिर भक्ति मार्ग में भी महिमा योग्य बन जायेंगे।

3) जैसे महान् आत्मा के आगे सभी झुकते हैं, वे कहाँ भी नहीं झुकते। ऐसे आप महान् आत्मायें, श्रेष्ठ आत्मायें जो बाप की चुनी हुई आत्मायें हो, विश्व के राज्य अधिकारी हो, बाप के वर्से के अधिकारी हो, विश्व कल्याणकारी हो, ऐसी आत्मायें कहाँ भी, कोई भी परिस्थिति में वा माया के भिन्न-भिन्न आकर्षण करने वाले रुपों में अपने आपको झुका नहीं सकते। कैसा भी माया का फोर्स हो लेकिन वे झुक नहीं सकते।

4) महान आत्मायें वह हैं जो धर्म और कर्म दोनों की श्रेष्ठता में समान रहें। महान आत्मायें जितना ही एकान्तवासी उतना ही रमणीक भी होंगी। एकान्त में रमणीकता गायब नहीं हो सकती। वह जितना गम्भीर उतना मिलनसार भी होते हैं।

5) महान वह है जिसका एक संकल्प भी कभी साधारण वा व्यर्थ न हो और एक कर्म भी साधारण वा बिना अर्थ न हो। उनका हर कदम, हर नज़र अर्थ-सहित होता है। महान् आत्माओं के हर कर्म का चरित्र के रुप में गायन होता है। महान् आत्माओं के हर्षित-मूर्त, आकर्षण-मूर्त और अव्यक्त-मूर्त का मूर्ति के रुप में यादगार है।

6) मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता वाले को सभी महान रूप से देखते हैं। तो यह मधुरता का विशेष गुण आप महान आत्माओं में जरूर होना चाहिए। मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला कर सकेंगे।

7) महान आत्मा वह है जो रहम की भावना से सम्पन्न है। जो दूसरों को सुख देते हुए अपने में सुख भरता है। सुख देना ही लेना है। दूसरों को सुख देने से खुद भी सुख स्वरूप बनेंगे, कोई विघ्न नहीं आयेंगे। जैसे अंधों को आंखे देना महान कार्य है। ऐसे अज्ञानी (ज्ञान नेत्र हीन) आत्माओं को ज्ञान नेत्र देना यह महान आत्माओं का कर्तव्य है।

8) महारथी माना ही महान। लेकिन महानता सिर्फ संकल्प में नहीं, सर्व में महानता। संकल्प को प्रैक्टिकल में लाने के लिए सोच करने में समय नहीं लगता। यह करें या न करें, कैसे करें, क्या होगा यह सोचने की भी आवश्यकता नहीं। महान आत्मा को संकल्प ही ऐसे उत्पन्न होंगे जो संकल्प उठा और सिद्ध हुआ।

9) जो महान आत्मायें हैं उनमें रहमदिल के साथ रुहाब और रूहानियत साथ-साथ दिखाई देगी। तो महान आत्मा बनकर हर संकल्प और कर्म करो। मैं सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ महान आत्मा हूँ, इस स्मृति से किसके भी सामने जाओ तो आपकी महानता के आगे उनके सिर झुक जायेंगे।

10) महानता लाने के लिए ज्ञान की महीनता में जाना पड़े। जितना-जितना ज्ञान की महीनता में जायेंगे उतना अपने को महान् बना सकेंगे। महानता कम अर्थात् ज्ञान की महीनता का अनुभवी कम। महान् आत्मा का कर्त्तव्य क्या होता है - वह स्मृति में रखो। अगर कोई साधारण कर्त्तव्य करे तो उसको महान् आत्मा नहीं कहेंगे।

11) जैसे महान् आत्माओं का भोजन, खान-पान आदि महान होता है। वैसे देखना है आज हमारी बुद्धि का भोजन महान रहा? शुद्ध भोजन स्वीकार किया? महान आत्माओं का आहार-विहार ही देखा जाता है। अगर कोई अशुद्ध संकल्प वा विकल्प वा व्यर्थ संकल्प भी बुद्धि ने ग्रहण किया तो समझना चाहिए कि आज मेरे आहार में अशुद्धि रही।

12) जो महान आत्मा होते हैं उनके हर व्यवहार अर्थात् चलन से सर्व आत्माओं को सुख का दान देने का लक्ष्य होता है। वह सुख देता और सुख लेता है। तो चेक करो कि महान आत्मा के हिसाब से आज के दिन कोई को भी दु:ख दिया वा लिया तो नहीं?

13) महान आत्मायें अर्थात् सदा पुण्य का कार्य करने वाली। वे जिसको भी सुख देंगी उसके अन्दर से उनके प्रति आशीर्वाद निकलेगी। उनका मुख्य लक्षण है अहिंसा। तो चेक करना कि मन-वचन-कर्म से कोई भी प्रकार की हिंसा तो नहीं होती है?

14) जैसे आपके जड़ चित्रों के आगे जाकर खुद ही झुक जाते हैं। अपने को नीच और मूर्ति को महान् समझते हैं। मूर्ति कहती तो नहीं कि तुम नीच हो लेकिन स्वयं ही अपना साक्षात्कार करते हैं। ऐसे ही आप लोगों के सामने कोई भी आये तो ऐसा अनुभव करे कि यह क्या हैं और हम क्या हैं?

15) महान् आत्माओं के हर बोल को महावाक्य कहा जाता है। महावाक्य अर्थात् महान् बनाने वाले वाक्य। महावाक्य विस्तार के नहीं होते। जैसे वृक्ष के अन्दर बीज महान है, उसका विस्तार नहीं होता है, उसमें सारा सार होता है, ऐसे ही महावाक्य में विस्तार नहीं होता, किन्तु उसमें सार होता है। ऐसे सार-युक्त, युक्ति-युक्त, योग-युक्त, शक्ति-युक्त, स्नेह-युक्त, स्वमान-युक्त और स्मृति-युक्त बोल बोलने वाले ही महान हैं।

16) आजकल की जो महान् आत्मायें हैं, भक्त लोग उनके हर बोल के पीछे सत्य वचन महाराज कहते हैं। चाहे व्यर्थ वा गपोड़ा भी लगता हो फिर भी समझते हैं कि ये महान आत्माओं के बोल हैं, ऐसा महत्व रखते हैं। सत्य वचन महाराज का यह यादगार कब से आरम्भ हुआ? पहले यथार्थ प्रैक्टिकल में चलता है, फिर भक्तिमार्ग में सिर्फ यादगार रह जाता है। तो आपके हर बोल का महत्व इतना अभी तक भी है, जो अन्तिम घड़ी तक भी देख व सुन रहे हो।

शिवबाबा याद है? *ओम् शान्ति* 10-7-13 *मधुबन*

"त्यागी और तपस्वी मूर्त बनो तो सेवा पीछे-पीछे आयेगी"

(दादी जानकी)

तीन बारी ओम् शान्ति कहने से कितना फायदा हुआ है, यह ट्रायल करके देखा है? मैं ऐसे ही नहीं बोलती हूँ, बहुत अनुभव से देखा है, मैं कौन? मेरा कौन?... ताकत आ गयी। ड्रामा अनुसार चक्र फिराके देखो क्या करने का है? 7 दिन का कोर्स कहते हैं पर 3 दिन में भी अच्छी तरह से आत्मा, परमात्मा, सृष्टि चक्र का ज्ञान दे सकते हैं। भले झाड़ का ज्ञान पीछे अच्छी तरह से दो। पहले अपने को आत्मा समझें, मेरा बाबा परमात्मा है, तो न मेरे आगे कोई प्रॉब्लम है, न मैं किसी के लिए प्रॉब्लम रहूँ, सेफ्टी है। मेरा तो अनुभव यह है। आप स्वीकार करो तो मैं कहेंगी मेरी प्यारी सखियाँ, साथ चलने वाली सखियाँ, अभी जो संगम पर बाबा का साथ है, साक्षी होकर पार्ट बजाने का, उसमें ताकत बहुत है। एक बाबा का साथ, मैं अकेली नहीं हूँ। भले स्थूल में कोई साथ न देता हो। मैं आत्मा हूँ, मेरा साथी बाबा है। जब से बाबा के बने हैं सारी लाइफ का यह अनुभव है। जिसको यह अनुभव है वो सदा अतीन्द्रिय सुख में रहे हैं।

पहली बार लण्डन में जब कुमारका दादी आई थी तो मुझे ऐसे लगा जैसे बाबा आया है। जितना दिन दादी वहाँ रही उतना टाइम मुझे दादी में बाबा नज़र आ रहा था, असुल दादी नज़र नहीं आई। यह एक दो के लिए रिस्पेक्ट जो है ना, वह जैसे अपने लिये रिस्पेक्ट पैदा करना है।

आप टीचर बहनें सेवा बहुत करती हो पर त्याग वृत्ति नहीं है। सच बताओ आप कह सकती हो कि हम त्याग वृत्ति, तपस्वी मूर्त सेवाधारी हैं? सारी विश्व सेवा का आधार है त्याग तपस्या। जिसको अन्दर से तपस्या करने की रूची होगी, उससे जो बल मिलता है वो बहुत सुखी रखता है। जितनी अभी आपकी सभा है न्यूयार्क के पीस विलेज में भी अभी 750 अमेरिकन का संगठन हुआ, यह है त्याग और तपस्या का फल...। सब अच्छी तरह से सम्भाल रहे हैं, हमारी मोहिनी बहन, जयंती बहन, सुदेश बहन, डॉ.निर्मला के त्याग तपस्या का यह फल है। यह कोई मान-शान के भूखे नहीं हैं। कितना इन्हों को विदेश में सहन करना पड़ा होगा। यहाँ इण्डिया में भी बाबा के सेन्टर पर रहते झाडू, बर्तन, कपड़े धुलाई करना ..यह सब काम हम खुद करते थे। आज के जमाने की अलग बात है।

हम सब्जी पर भी ज्यादा खर्चा नहीं करते थे, छोटे-छोटे आलू ले आते, उसमें अच्छी तरह से पानी डालके उसकी सब्जी बनाके, दो रोटी पकाके जो भी 4-5 बहनें थी वो बड़े प्यार से खाना खाते थे। एक छोटा-सा बगीचा था और एक छोटा हॉल था। गाय के गोबर का पोंछा लगाते थे। वहाँ क्लास करते थे, योग करते थे। अभी तो कई सेन्टरों पर तेरा मेरा बहुत है। फ्री हो जाओ इससे। आप पर जिम्मेवारी बहुत है। सब अच्छे हैं। कोई अच्छा नहीं है, मैंने तो कभी नहीं सोचा है। ऐसे किसी के लिए भी कुछ कहना जैसे आर्डनरी जुबान है। यह है ही ऐसे, मैंने यह कभी नहीं कहा है। यह ऐसी है, यह ऐसी है... यह कहना भी बड़ी भूल है। तपस्या नहीं है, मैं तो

सीधा ही कहती हूँ तपस्या का नाम-निशान नहीं है। सेवायें बहुत हैं, सेवा में इतनी वृद्धि हो गयी है, वो दादी सम्भाल रही है। हमारी बड़ी दादी ने बहुत सम्भाला है।

दादियों के समय में एक बार तपस्या का संगठन किया था तो सभी को बुलाया था। चारों ओर शान्ति ही शान्ति थी, तपस्या बहुत थी, इतनी तपस्या करते थे। अभी मेरी भावना यह है कि यहाँ भी ऐसा एक टाइम तपस्या का रखो, कोई हिले नहीं। लाल बत्ती बंद होगी तो फौरन हिलना शुरू हो जाता है। बाबा के होते यह नहीं होता था। बैठे हैं तो बैठे हैं। उस समय हम पुरुषार्थ करते थे मैं शुद्ध आत्मा हूँ, मैं शुद्ध आत्मा हूँ... फिर बाबा चेक करता था, इनमें क्या परिवर्तन आया है। वो दृश्य भूलता नहीं है। अगर हम दिल में, मन में कोई भी किचड़ा इकट्ठा करेंगे तो हम कौन-सी आत्मा होंगी? परमात्मा की सन्तान? परमात्मा की सन्तान माना जो बाबा करा रहा है वो करने वाला। तपस्या की जितनी भी बातें हैं वह सब जीवन में लाने वाला वो है शुद्ध आत्मा। आज जैसे प्रोजेक्टर शो या कम्प्युटर द्वारा दिखाते हैं, टी.वी. आदि में, वैसे पहले जैसी भावना वैसा साक्षात्कार प्रैक्टिकल में होता था। ऐसे योग के प्रोग्राम होना चाहिए, हम तो लण्डन में ऐसे ही तपस्या करके सेवायें शुरू की थी। जो भी एक बार आके बैठे उसको वापस जाने का दिल नहीं करता था, ऐसा वायुमण्डल बनाके रखा था।

तो हे, मेरी मीठी बहनें! इस भट्ठी से यहाँ की त्याग-तपस्या की वृत्ति से, एक सेकेण्ड में बात को फिनिश करके दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल। कुछ भी हो जाये, मेरी वाणी में न आये... बातें तो बाबा के सामने भी आयी, मम्मा के सामने भी आयी। परन्तु मैंने कभी अपनी वाणी से नहीं कहा होगा। एक बारी भी अगर आदत पड़ी तो वह छोड़ती नहीं है। अच्छी आदत को धारण करने में टाइम लगा है, जो निकम्मी आदत है वह छूटती नहीं है। त्याग वृत्ति माना क्या है? गहराई में जाओ, देह सहित देह के सम्बन्धियों का तो छोड़ो, पर देह-अभिमान वश कोई भी संकल्प वृत्ति न हो। हमारी मनोवृत्ति साफ हो। मन के संकल्प से वृत्ति ऐसे बनती है, फिर जैसी वृत्ति होती है, ऐसी दृष्टि होती है। हम ऐसा मिसाल बनेंगी, तो निमित्त बनने वाली आत्मा को बाबा ऐसे नज़र से निहाल करने की गिफ्ट देता है। हमारी नज़रों में बाबा, बाबा की नज़रों में हम। बाबा के नूरे रत्न बनने के लिए बाबा ऐसी दृष्टि दे रहा है जो हमारे नूर में बाबा ही दिखाई पड़े, तो हम कितने पदमापदम भाग्यशाली हुए! ऐसी हमारी दृष्टि भी महासुखकारी हो जिसको देखो वो खुशी में गदगद हो जाये।

त्याग से तपस्या अच्छी होती है, त्याग में तपस्वी मूरत अच्छी बनती है, ऐसों का फिर पत्र-व्यवहार, बोल-चाल ऐसा होता, जो इन दिनों आपस में वह याद दिलाने से एक दो को खुशी होती है। एक एक ऐसे नज़र आवे, ऐसे नहीं यह फलाने देश में रहती है, फलाने शहर में रहती है। निमित्त मात्र पाँव वहाँ हैं, बाकी धरती पर पाँव नहीं हैं, ऐसे हमारे से औरों को अनुभव हो। कोई कोई आत्मा अभी है जिनका धरती पर पाँव नहीं है। जहाँ भेजो वहाँ खुद भी खुश और भी खुश। नाम नहीं लेती हूँ पर ऐसी आत्मायें तैयार हैं, प्रैक्टिकल दिखा रही हैं अपना, फीलिंग ले रही हैं, बाबा हमारे से क्या चाहता है! अब नहीं करेंगे कब करेंगे, अब नहीं किया तो हमने गंवाया। कहेंगे चलो राजाई पद नहीं मिलेगा, प्रजा पद ही सही, वह भी ठीक है, बस इसमें इतने में ही खुश हैं। क्वीन मदर की बात सुनाती हूँ कहती थी भले कृष्ण को जन्म कोई भी देवे पर पालना मैं करुँगी। क्वीन मदर ने जब शरीर छोड़ा, उस समय न दीदी, न शील कोई सामने नहीं था। पाण्डव भवन के कमरे में शरीर छोड़ा क्योंकि झुक-झुक, मर-मर, सिख-सिख... यही एक मंत्र पक्का था। दीदी की लौकिक माँ थी।

कई कहते हैं मैं ही मरुँगी क्या? और किसी को कोई कहता नहीं है। मैं कहती हूँ क्या बोला? सम्भलके बोलो। तो मैं ज्यादा क्या कहूँ... आप ऐसी बहनों के बीच में बुलाती हो तो जी चाहता है, अभी-अभी सभी बाबा के गले की माला बन जायें।

अष्ट रतन माना एक बाबा दूसरा न कोई। अष्ट रत्नों में आने वालों की सेवा वन्डरफुल है, वह नम्बरवार नहीं है। अष्ट एक बराबर हैं। जरा अष्ट रत्नों को इमर्ज करो साक्षात् बाप समान। अगर बाप समान नहीं बनें, पर निश्चय बुद्धि वैजयंती माला में तो आवें ना। कोई भी बात में हार न खायें, बात कोई भी आवे। आई है बात चली जायेगी, बात बैठती नहीं है, हम बात को अन्दर में बिठाते हैं। तो सबको साथ देते यानि हाँ में हाँ करते हैं, कहते हैं यह बरोबर है, मेरे साथ भी ऐसा ही है... तो वह बातें भूत बन जाती हैं। कहाँ भगवान! भूतों को भगाने वाला, कलियुग का नाश करने वाला, जरा भी कलह नहीं। जहाँ पाँव रखो वहाँ शान्ति और प्रेम की गंगा बहती है। ऐसी देवियों, शक्तियों को क्या बोलूँ! अभी ऐसा योग करो एकदम सभी। त्याग, तपस्या में सेवा तीसरा सबजेक्ट है, ज्ञान योग धारणा में भी चौथा सबजेक्ट है। तो नम्बरवार ज्ञान, ज्ञान कहता है योग लगाओ, योग कहता है धारणा की मूर्ति बनो, फिर सेवा अपने आप होगी। सेवा के पीछे हम नहीं घूमती, सेवा हमारे पीछे आपेही आती है। त्याग वृत्ति वाले को टाइम बहुत है, तपस्या मूर्त रहने का और सेवा तो उनकी हाज़िरी है बस। यह भी मेरे मीठे अव्यक्त बाबा ने कहा था, हाज़िरी भी जरुरी है। जी बाबा। तो वो बाबा की बात सत्य, सत् हो रही है। अच्छा -

"कुमारियों प्रति - बापदादा और दादियों की उम्मीदें - दादी जानकी

वण्डरफुल कुमारियों का ग्रुप है। दादी दीदी और बापदादा की आपसे क्या उम्मींदें हैं? इतनी उम्मींदें पूरी करने के लिए बाबा को कितने बच्चे चाहिए! जितना बड़ा बाबा है उतनी ऊंची उम्मींदें रखी हैं? जितनी पूरी करो, और उतनी रखता है। मैंने एक बारी बाबा को कहा कि आपको रिटर्न क्या दूं? मैं जितना करती हूँ फिर और और देते हो। दिल दर्पण में अपने को देखो फिर बाबा को देखो, बाबा की क्या उम्मींदे हैं? मैं आत्मा हूँ, अपने को देखो। अमृतवेला हो, शाम हो, कोई भी टाइम हो, अन्दर देखो मनमनाभव, आंखें खोलो मध्याजी भव, बस। विदेश में कई हैं जो कमाते हैं और सेन्टर भी चलाते हैं। सेन्टर पर रहती हैं, जॉब भी करती हैं और यज्ञ सेवा भी करती हैं।

सेकेण्ड में साइलेन्स में जाना है। उसमें गीत की, लाइट की बात नहीं हैं क्योंकि बाबा रोज़ मुरली में बताता है, भिन्न-भिन्न प्रकार से याद के बारे में बताता है। किसी ने अभी पूछा एकाग्रता की शक्ति कैसे पैदा करती हो? दिल से होती है या मन से होती है? भले जज बनो, वकील बनो, लेकिन अगर यह एकाग्रता नहीं सीखा तो कुछ नहीं सीखा। पढ़ाई-लिखाई में थोड़ा टाइम दिया है, बाकी अभी का टाइम किसमें देना है? संगमयुग का टाइम है, पता है ना! बाबा आया हुआ है, क्या से क्या बनाने के लिए। जिस कॉलेज में जाते होंगे उनमें आपसे किसको प्रेरणा मिलती होंगी! जॉब करते हुए भी प्रेरणा मिलती होगी! उनको समझ में आता है यह कौन हैं! तो स्व सेवा कोई पैसे से नहीं होती, पढ़ाई से भी नहीं होती। इस पढ़ाई से होती है। जो बाबा पढ़ा रहा है, मुख में खिला भी रहा है, तो कानों में सुना भी रहा है।

गुणों की लिस्ट है, शक्तियों की लिस्ट है। 12 गुण और 8 शक्तियाँ दोनों ही हमारे में आनी हैं जरूर। संगम का समय है यह याद करने से गुण भी आयेंगे तो शक्तियाँ भी आयेंगी। कैसे आयेंगी? अरे बाबा का बच्चा हूँ ना! बाबा ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, आनन्द का सागर है। मैं सारे विश्व में कहाँ नहीं जायेंगी, पर जहाँ सागर है वहाँ जरूर जायेंगी। दूसरा पानी के झरने जहाँ बहते हैं वहाँ भी जायेंगी। पानी पड़ते-पड़ते पत्थर भी एंजिल बन जाते हैं। तो बाबा की वाणी से निकला हुआ अमृत पड़ते-पड़ते हम सचमुच एंजिल बन गये। बाबा कहते बच्चे अहंकार को मारो, देह अभिमान को छोड़ो, देह से परे रहने का अभ्यास करो तो सहज योगी बन जायेंगे।

निमित्त शरीर है उसके द्वारा पहले मन्सा, फिर वाणी फिर कर्म करो। ऐसे नहीं मन्सा कहीं भी घूमती रहे। पहले मन्सा का ख्याल करो फिर वाणी में आओ। संगमयुग में बाबा ने मनमनाभव के मन्त्र से मन्सा को खींचा है। जहाँ हमारा मन होगा, वहाँ तन होगा, वहाँ धन होगा। तन में आत्मा है पर बुद्धि में क्या है! आत्मा में मन-बुद्धि है। पूर्व में भी मन-बुद्धि से संस्कार बने हैं। बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो पूर्व के किये हुए विकर्म विनाश कर दूंगा। अभी कोई भूल करेंगे तो माफ कर दूंगा। जीवन अच्छी बनाने का संकल्प करेंगे तो मैं शक्ति दूंगा।

मुख्य बात जबसे बाबा, बाबा कहा है तो कर्मबन्धन कट गये हैं, छूट गये। माँ, बाप, बहन फलाना सब ईश्वरीय परिवार है। परिवार को देख कितना खुशी होती है। मेरे को परिवार को देख शक्ति आती है। टोटल मधुबन का शान बढ़ाने वाली हैं यह कुमारियाँ।

बाबा मैं आत्मा शरीर में क्यों हूँ! आपके लिए ही तो हूँ। आपको न देखूं, अरे खुदा की कितनी सुन्दर रचना है। रचता कैसा होगा! जो हमारे अन्दर खुशियां हैं वो आपके सामने बांटते हैं, जितनी लेना है लो। कभी न खुशी हो वो दिन आपको आयेगा नहीं।

मैं कभी नहीं कहेंगी कि यह सुधरेगी नहीं। अरे लगन की अग्नि क्या नहीं कर सकती है! लगन अग्नि जैसी हो। अग्नि कई चीज़ों को भस्म भी करती है। किसी चीज़ को शुद्ध सच्चा बना देती है। सोने को सच्चा बनाने के लिए उसको आग में डालते हैं। तो यह लगन की अग्नि भी कई काम करती है। विकर्म विनाश करती है, श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति देती है। लगाव न हो कहाँ! यह चेक करना है। कहाँ भी लगाव होगा तो लगन लगाने में विघ्न आयेंगे, फिर बहाना बनायेंगे। अपनी कमजोरी को छोड़ेंगे नहीं, कमजोरी अनुसार प्लैन बनायेंगे। समर्पण से डरते हैं माना कमजोरी है ना। किसी के स्वभाव से न चल सकूं तो.. यह कमजोरी है ना। उनको माँ-बाप का भी बन्धन या कोई न कोई प्रकार का बन्धन रोक लेता है। पर जिनकी सच्ची लगन है, उनको कोई रोक नहीं सकता है क्योंकि खुद की लगन है, बाबा का ऐसा अच्छा बनके रहना है, बाबा के साथ जाना है।

जो बाबा को कराना था, बाबा ने कराया है, अच्छा पुरुषार्थ

किया है। सतयुग के लिए भी सब सामान समेट करके दे दिया है। जो बाबा ने कराया वो अच्छा पैक हो गया, वो वहाँ मिलेगा। पर अब क्या करना है? विकर्माजीत, कर्मातीत सम्पूर्ण फरिश्ता जिसके धरती पर पांव नहीं। हाथ दोनों ऐसे। पहले कुछ पकड़ के रखा है अथवा किसी ने मेरे को पकड़के रखा है, ऐसे थे। जैसे जेल बर्ड होते हैं। जेल की दीवारे ऊंची होती हैं कोई बाहर न निकल जाये। महल की भी दीवारें ऊंची होती हैं, बाहर पुलिस वाले खड़े रहते हैं। जो अन्दर कोई जा नहीं सकता। जेल में अन्दर से कोई बाहर निकल नहीं सकता। मैं कौन हूँ, पूछो ना - क्या कर रही हूँ? जेल बर्ड हैं, पैलेस में रहने वाले हैं। आप लोग क्या समझते हो घर में रहती हो या जेल में रहती हो? मैं तो समझती हूँ, मैं पैलेस में रहती हूँ। अरे बाबा के किले में बैठे हैं!

मुस्करायेगा कौन? जिसको कोई बात मुश्किल नहीं है। यह अभी सैपलिंग लग रहा है। बाबा ने मुरली में कभी भी ट्रेनिंग शब्द नहीं बोला है। भूँ-भूँ कर अपने जैसा बनाओ। कछुए जैसा काम करके समेट लो। क्या यह प्रैक्टिस नहीं कर सकते हो? दो काम है, भ्रमरी भूँ-भूँ करती है। संग ऐसा मिले तो रंग बदल जाये। याद ऐसे करो, जो बाबा की याद के बिगर कोई बात ही नहीं। जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं, जहाँ बाप है वहाँ बात नहीं। यह मैंने प्रैक्टिकल देखा है। मैं कभी भी बाबा के सामने बाबा को कोई बातें सुनता हुआ नहीं देखा। किसकी ताकत नहीं थी जो बाबा के सामने बात करें। बाबा जो स्वर्ग स्थापन कर रहा है, उसकी निशानियाँ यहाँ अनुभव करा रहा है। सतयुग में राजाई होगी, उसका अनुभव अभी यहाँ करा रहा है। मैं राजाओं का राजा हूँ, यह नशा कभी उतरता नहीं है। मेरा नशा क्यों उतरे! दादीपने का भी नशा दिखाऊं तो नुकसान है। सेवक हूँ, सेवाधारी हूँ। मेरा न इस्ट है, न वेस्ट है, यही बेस्ट है। ऐसी भावना वाली भाषा सीख रही हो ना! जो शब्द मुख से निकलते हैं उसमें मित्रता भाव है, भावना है, विश्वास है, ऐसी भाव और भावना वाली भाषा आपने स्वीकार की तो पूर्वज भी खुश, दादी भी खुश।

सभी ने मेरे में उम्मींद रखी है, सभी की उम्मींदे पूरी करनी हैं। बुद्धि में और कोई बात है नहीं, एलाऊ नहीं है। दिल द्वारा बुद्धि में जाती है। बुद्धि फिर वृत्ति को खराब करती है। वृत्ति या तो बुद्धि को ठीक रखती है या तो बुरा करती है। जैसी दृष्टि वैसी वृत्ति, बीच में है बुद्धि। बाबा की दृष्टि महासुखकारी। ऐसे अपने को सिखाना चाहिए। अपने को टाइम देना है, वेस्ट टाइम न करें तो अपने लिए बहुत टाइम है। इतना हो यह बेस्ट है, यह वेस्ट है। इतना भेंट करने से भी अपनी सेफ्टी है।

एक है साथ, एक है संग, एक है स्नेह, एक है सहारा। वो सब मिला है सच्चाई से। संग, साथ, स्नेह, सहारा मिला है सचाई से। संग और साथ में क्या फर्क है? संग का रंग लग जाता है एकदम, कई अच्छी-अच्छी आत्माओं को ऐसा लग जाता है जो मज़ाल कोई बात सुनें। कई फिर ऐसे हैं जो अच्छे संग में, अच्छी कम्पनी में रहते हैं, ऐसे को बाबा साथ देता है। दादियों का भी वो आत्मा साथ लेती है, सीखने की भावना होती है। जहाँ तक जियेंगे वहाँ तक सीखेंगे। सीख रहे हैं यह भावना रहे, सम्पूर्ण बनने का लक्ष्य है। बाबा हमको लक्ष्य सोप से साफ कर रहा है, यह बाबा की मेहनत नहीं देख रहे हो। बाबा की मुरली क्या है? लक्ष्य की स्मृति दिलाने वाली है। और लक्ष्य सामने है तो लक्षण खींच के हमारे पास आ जाते हैं। मनन, चिन्तन, मंथन, सिमरण। मन्थन, मन को जो बात अच्छी लगी, चिन्तन में वो ही आई, विचार सागर मंथन चला फिर मक्खन निकल आया, ताकत आ गई वो बाबा के महावाक्यों की। वो सिमरण, सिमर, सिमर सुख पाओ, कलह कलेष मिटाओ। ऐसा मीठा ज्ञान जो बाबा ने दिया है उसे सफल करो। जीवन, समय, संकल्प, सफल करो। ऐसा मिसाल बनो जो कोई देखे कि बाबा के बच्चे हैं तो ऐसे हैं। ओ. के. ओम् शान्ति।

01-11-15

“एक बाबा की याद में मगन रहने वाला ही महायोगी है”

(गुल्जार दादी)

ओम् शान्ति। आज का दिन कितना प्यारा है, हम सब आपस में कितना खुशियां मना रहे हैं। एक दो को देखकर के क्या याद आता है हमारा राज्य कितना प्यारा, कितना मीठा है... हर आत्मा कितनी खुश है, खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। जहाँ खुशी है वहाँ सब कुछ है। तो बताओ कितनी खुशी है! सोचो, कौन मिला? क्या मिला? क्या बना दिया? अब तो बन गये ना कि बाबा ने दिल खुश रत्न बना दिया। वाह बाबा वाह! थे क्या! और क्या बना दिया! हरेक देखता है तो बोलते

हैं तुमको बनाने वाला कौन? तो हम कहते हैं मेरा बाबा। जो आपका भी बाबा है लेकिन आपने पहचाना नहीं लेकिन हमारा आपका सबका बाबा है। उसको कैसे भूल सकते हैं तो बस उस ही याद में मगन में रहने वाले को कहा जाता है महायोगी। तो आप और हम सब कौन है? महायोगी। हमको देख करके सबको क्या याद आता है? इनका बाबा कौन? बोलो, पूछते हैं ब्रह्माकुमारियाँ, आपका बाबा कौन है? तो हम कहते हैं इनका बाबा तो अपना बाबा है लेकिन अपना बाबा कौन है? आप और हमारा बाबा एक ही है। वो कौन है? शिवबाबा। सभी का पहले पहले अनादि बाप कौन? शिवबाबा ही है। तो हम आज बाबा की याद में बैठते हैं, बस मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। मेरा ही बाबा है। वाह! खुशी कितनी होती है, मेरा बाबा, वाह! भगवान सबका है लेकिन खास मेरा है क्योंकि मैंने अपनाया है। हरेक को अपने बाबा को बाबा बनाना चाहिए यानी याद करना चाहिए कि मेरा बाबा है तो बहुत खुशी और ऐसा मिठास आ जाता है जो दूसरे को भी मीठा बना देता है। और देखो, यहाँ सभी हम आपस में रहते हैं कितने मीठे रहते हैं! दु:ख और अशान्ति का नाम ही नहीं है क्योंकि हम बाबा के बच्चे और बाबा को सभी याद क्या करते हैं - सुखदाता है, शान्तिदाता है तो उसके बच्चे हैं और उसकी याद में बैठे हैं तो हम भी किस रूप में है मीठे और प्यारे जैसे बाबा वैसे हम भी। उसी याद में रहते हैं तो आप भी रहते हो ना। तो बस जिस समय कुछ भी होवे ना, बस 2-3 अक्षर में जिगरी दिल से कहो ''मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा''। तो जितना मेरा होगा उतना खुश रहेंगे क्योंकि बाबा तो है ही बाबा। कुछ भी होता है दुनिया में दु:ख भी होता है तो भी किसको याद करते हैं? मेरे बाबा को। कोई को पता है मेरा, किसी को पता नहीं, है सबका बाबा। मेरा बाबा कहके याद करें तो सब दु:ख दूर। तो बस, मेरा बाबा, प्यारा बाबा ऐसा मीठा बाबा और कोई हो ही नहीं सकता। कभी भी दु:ख की कोई भी लहर आवे बस, बाबा के पास चले जाओ, मेरा बाबा प्यारा बाबा बस, प्यारा और मेरा इसमें खो जाओ तो सब दु:ख दूर और बाबा और मैं एक दो में समा जाते हैं। ठीक है ना, यह तो 5 मिनट की बात है। कभी भी कुछ भी गड़बड़ हो, कोई भी ऐसी दु:ख की लहर या अशान्ति की आवे तो बस, यही याद करो मेरा... मेरा कौन? दु:ख मेरा नहीं। मेरा कौन? बाबा। बस, मेरा आवे ना तो बस बाबा ही याद आये। तो बस फिर सब मेरा मेरा खत्म, सिर्फ एक ही याद रहे मेरा बाबा। बाबा कहा और सुख आया। उसी में खो जाओ, दु:ख का नाम-निशान नहीं रहेगा। मेरा बाबा तो है ही तो उसको याद करने से और मेरा मेरा सब खत्म। मेरा बाबा कौन है उसका विस्तार अन्दर ही अन्दर चलता रहे। मेरा बाबा कौन? मेरा बाबा सुखदाता। मेरा बाबा शान्तिदाता। मेरा बाबा सबकुछ देने वाला बाबा। कुछ भी चाहिए बाबा भरपूर कर देगा। और कोई से मांगने से कुछ नहीं होगा लेकिन बाबा को कहा मेरा बाबा, तो बाबा भरपूर कर देगा। हमेशा के लिये वो मेरा हो जायेगा।

अच्छा –ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"ईश्वरीय मर्यादायें ही हमारा स्वधर्म है, मर्यादाओं को दृढ़ता से पालन करो"

1) संगठन को एकमत बनाने का आधार है फेथ। जब आपस में एक दो में फेथ रखते हैं तो सहयोग अवश्य मिलता है। आपका कार्य सो मेरा कार्य। फेथ के पीछे मैं और तू, तेरा और मेरा सब समाप्त हो जाता है। फेथ रहे तो कभी भी अभिमान नहीं आयेगा। आपकी महिमा सो मेरी महिमा। आपकी बड़ाई सो मेरी बड़ाई इसलिए हम अपने समान साथी को इतना रिगार्ड दें जो वह आपेही हमें दे, कहना न पड़े यह भी मर्यादा है।

2) हरेक की विशेषताओं को देखना है। हरेक में बाबा ने कोई न कोई खूबी जरूर भर दी है। बड़ी बड़ाई बाबा की है, मेरी नहीं। सदैव अपने सामने लक्ष्य हो बाबा। बाबा ने हमें निमित्त बनाया है।

3) लॉ उठाना, टोन्ट कसना, टोक देना, यह मेरा काम नहीं है। मैं कभी भी अपने हाथ में लॉ नहीं उठा सकती। हमें बाबा जो सेवा देता है उसे प्राण देकर करनी है, यह हमारा लक्ष्य हो। फेथ को तोड़ने वाला कांटा है रीस। तो मुझे आत्माओं से रीस नहीं करनी है, रीस करो तो बाबा से क्योंकि हमें बाप समान बनना है।

4) ईष्या करना मंथरा का काम है। यह वायदा करो कि मैं मंथरा नहीं बनूँगी। ईर्ष्या अथवा विरोध भावना दूसरे की निंदा करायेगा। ईर्ष्या करना यह रावण की मत है। बाप की नहीं।

5) हरेक की बात का भाव समझना है, स्वभाव को नहीं देखना है। अगर किसी की गलती दिखाई भी देती है तो बाबा ने हमें समाने की शक्ति भी दी है। कभी एक की बात दूसरे से वर्णन नहीं करना है। भल सुनो, लेकिन उसे वहीं पर सुनी अनसुनी कर दो। भूल को अन्दर रखने से वायब्रेशन खराब होता है। दूसरे की भूल को अपनी भूल समझो।

6) अपनी स्थिति को सदैव सुखमय रखो। कभी भी तंग दिल, उदास दिल नहीं बनना है। कोई झूठा अपमान करेगा कोई सच्चा। दुनिया की टक्करें अनेक आयेंगी लेकिन हमें उदास नहीं होना है। पत्थर भी पानी की लकीरें खा-खाकर पूज्यनीय बनता है। तो हमें भी सब कुछ सहन करके चलना है। हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना। बाबा के पास जाओ तो बाबा आपेही कदमों में बल भर देगा।

7) मुझे किसी भी आत्मा पर डिपेन्ड नहीं करना है। आत्मा पर डिपेन्ड करने से बैलेन्स बिगड़ जाता है। बाबा पर डिपेन्ड करो। एक दो का आधार लेकर चलना बिल्कुल गलत है। मुझे तो साथी चाहिए, सहयोग चाहिए.. नहीं। मेरा साथी एक बाबा है। मैं बाबा से ही सहयोग लूँ।

8) दूसरों को सन्तुष्ट करना - यह बहुत बड़ा पुण्य है, इससे हमारी आत्मा को बल मिलता है। किसी के गुणों पर मोहित नहीं होना है। सदा बाबा को आगे रखो। बाबा को आधार बनाओ तो किसी में भी फसेंगे नहीं।

9) हमारा संसार बाबा है इसलिए कभी भी अन्दर में यह भावना नहीं आनी चाहिए, यह मेरा स्टूडेन्ट, यह तेरा। किसी भी प्रकार का स्वार्थ न हो। स्वार्थ अधीन बना देता है। किसी देहधारी में स्नेह जाता है माना स्वार्थ है। इस स्वार्थ से ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लंघन होता है इसलिए साकार बाबा ने हमेशा हमें स्नेह दिया लेकिन स्वार्थ का स्नेह नहीं दिया। तो जैसे हमारा बाबा निःस्वार्थी था वैसे निःस्वार्थी बनो। तो सबसे न्यारे और प्यारे बन जायेंगे।

10) ऐसा कभी नहीं सोचना है कि मेरा कोई सहारा नहीं है। लेकिन विघ्नों से घबराओ नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो। जड़ को समझकर उसके बीज को काटो। जड़ क्या है उसको समझो।

11) माया से डोन्टकेयर करना ठीक है, आपस में नहीं। जो आपस में डोन्ट केयर करते उनकी जबान पर लगाम नहीं रहता। जो आता वह बोल देते, यह स्वभाव भी डिससर्विस करता है।

12) जिद्द का स्वभाव ही ज्ञान में बहुत विघ्न डालता है। जिद्द वाले अपना और दूसरों का नुकसान करते हैं। जहाँ जी हाँ का स्वभाव है वहाँ सब फूल बरसाते, दुआयें देते, जहाँ जिद्द है वहाँ पानी के मटके भी सूख जाते हैं। कभी अपना मूड आफ नहीं होना चाहिए। अगर मूड आफ करके किसी को मुरली सुनाते, गद्दी पर बैठते तो भी पाप चढ़ता है।

13) अपने बड़े से कभी भी ना उम्मींद नहीं बनना है। सदा स्वमान में रहना है। ऐसे कभी नहीं सोचो यह तो मेरे पुराने संस्कार हैं। यह सोचना भी उसकी पालना करना है। पुराना संस्कार झूठा भोजन है। फिर क्या उस झूठे भोजन का भोग बाबा के सामने रखेंगे। मेरा तो दिव्य संस्कार हो, ईश्वरीय संस्कार हो। बहुत समय से पाले हुए संस्कार हैं उन सब संस्कारों को जला देने का दृढ़ संकल्प करो। रियलाइज कर उन्हें खत्म करो। व्यर्थ संकल्प तभी खत्म होंगे जब व्यर्थ संस्कार खत्म होंगे। हमनें नई गोद ली, हमारा नया जन्म है। हम ब्रह्माकुमार हैं तो यह परिवर्तन करो।

14) कोई भी किसी में पुरानी आदत हो, प्लीज़ उसे समाप्त करो। बाबा की लगन, बाबा की मस्ती उसी धुन में रहो। अपने को दुआओं के आधार पर चलाओ। बाबा की दुआयें लेते चलो। मुझे हर आत्मा से दुआ जरूर मिलनी चाहिए। दुआयें हमारा प्यार हैं, प्यार ही हमारी दुआयें हैं। जहाँ सर्व का मेरे से, मेरा सर्व से प्यार है वहाँ मेरे बाबा की दुआयें हैं इससे ही मुझ आत्मा की उन्नति है। यह हमारा अन्तिम जन्म, अन्तिम घड़ी है, किसकी हमारे ऊपर दुआ नहीं है तो उससे किसी भी तरह दुआयें जरूर लेना है।

15) हम बच्चे जो बाबा के पास स्वाहा हुए हैं उनमें अनुमान, मूड आफ, परचिन्तन, ईर्ष्या, द्वेष आदि की रस्सियाँ नहीं होनी चाहिए। इन रस्सियों को भी इस यज्ञ में स्वाहा करो। यही सच्चा मंगल मिलन है।

16) जहाँ नियम है वहाँ संयम है। जहाँ कायदा है वहाँ फायदा है। ईश्वरीय मर्यादा ही हमारा स्वधर्म है। सबसे प्रेम करो लेकिन प्यार मत दो, बाबा से सम्बन्ध जुटाओ, स्वयं से नहीं। हल्का व्यवहार मत करो। गम्भीर रहो। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का नियम है, दूर बाज, खुश बाज रहो.. हंसी से बात न करो। काम से काम बस... ओम् शान्ति।